International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 8.972 Volume 11, Issue 6, June 2024
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचार

डॉ. अनिल नानाजी चिकाटे
संचालक (सेवानिवृत्त)
ज्ञानस्रोत केंद्र, कवियत्री बहिणाबाई चौधरी,
उत्तर महाराष्ट्र, विश्वविद्यालय, जलगांव
Email: anilchikate@gmail.com

सारांश:

भारत के स्वतंत्रता के बाद के युग में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय जनसंघ और उसके बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की वैचारिक नींव को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके राजनीतिक दर्शन का केंद्र एकात्म मानववाद की अवधारणा थी, जिसका उद्देश्य सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और सामाजिक-आर्थिक सुधारों के माध्यम से व्यक्तिगत कल्याण को सामाजिक उन्नति के साथ एकीकृत करना था। यह शोध पत्र उपाध्याय के राजनीतिक विचारों की प्रगति में गहराई से उतरता है, एक आत्मनिर्भर भारत के लिए उनके दृष्टिकोण की जांच करता है और समकालीन भारतीय राजनीति पर उनके स्थायी प्रभाव का विश्लेषण करता है। उनके लेखन, भाषणों और नीति प्रस्तावों की व्यापक खोज के माध्यम से, यह अध्ययन भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में उपाध्याय के विचारों की स्थायी प्रासंगिकता को उजागर करना चाहता है।

मुख्य शब्द: ***पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, भारतीय जनसंघ, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राजनीतिक दर्शन***

परिचय:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, जो देश के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ के दौरान एक महत्वपूर्ण विचारक के रूप में उभरे। उनका योगदान न केवल भारतीय जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वैचारिक गलियारों में बल्कि भारतीय राजनीतिक विमर्श के व्यापक स्पेक्ट्रम में भी गूंजता है। भारत की स्वतंत्रता के बाद के युग की पृष्ठभूमि में, राष्ट्र की पहचान, शासन और सामाजिक-आर्थिक नीतियों पर गरमागरम बहसों से चिह्नित, उपाध्याय ने एक विशिष्ट दृष्टि पेश की, जो भारतीय सभ्यता के कालातीत लोकाचार को आधुनिकता की अनिवार्यताओं के साथ मिलाने की कोशिश करती थी।

उपाध्याय के राजनीतिक दर्शन के केंद्र में एकात्म मानववाद की अवधारणा थी, एक प्रतिमान जिसे उन्होंने राष्ट्रीय विकास के लिए एक समग्र ढांचे के रूप में व्यक्त किया। एकात्म मानववाद का मानना है कि व्यक्ति और समाज अविभाज्य इकाईयाँ हैं, जो जीवनयापन और प्रगति के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को अपनी आधारशिला मानते हुए उपाध्याय ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में निहित सामाजिक-राजनीतिक लोकाचार

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

की वकालत की, इसे एक आधारशिला के रूप में देखा जिस पर एक सामंजस्यपूर्ण और आत्मनिर्भर समाज का पोषण किया जा सकता है।

अपने मूल में, एकात्म मानववाद मानव अस्तित्व के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और भौतिक आयामों के संश्लेषण पर जोर देता है, सामाजिक-आर्थिक नीतियों की वकालत करता है जो सामूहिक प्रगति सुनिश्चित करते हुए प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण को प्राथमिकता देते हैं। इस दार्शनिक आधार ने न केवल उपाध्याय के विचारों को उनके समय की प्रचलित विचारधाराओं से अलग किया, बल्कि भारतीय जनसंघ, जिसकी उन्होंने १९५१ में सह-स्थापना की थी, और इसके उत्तराधिकारी, भाजपा, जो उनकी शिक्षाओं से प्रेरणा लेती रही है, के लिए एक मजबूत वैचारिक ढांचा भी प्रदान किया।

सैद्धांतिक चर्चा से परे, उपाध्याय के विचारों को आर्थिक विकेंद्रीकरण, स्थानीय समुदायों के सशक्तीकरण और स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने की उनकी वकालत में व्यावहारिक अभिव्यक्ति मिली - एक ऐसा दृष्टिकोण जो आत्मनिर्भरता और न्यायसंगत विकास के लिए प्रयासरत एक नव-स्वतंत्र भारत की आकांक्षाओं के साथ गहराई से प्रतिध्वनित हुआ। हाशिए के लोगों के उत्थान के लिए उनकी वकालत, अंत्योदय (पंक्ति में अंतिम व्यक्ति का उत्थान) के सिद्धांत में निहित है, समावेशी विकास और सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

आज, जबकि भाजपा उनकी विरासत से प्रेरित नेतृत्व में भारत पर शासन कर रही है, उपाध्याय के सिद्धांत नीति-निर्माण और वैचारिक बहस को आकार देना जारी रखते हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आत्मनिर्भरता और विकेंद्रीकृत शासन पर उनका जोर भारत के सभ्यतागत लोकाचार को कायम रखते हुए समकालीन चुनौतियों का सामना करने में प्रासंगिक बना हुआ है।

यह शोध पत्र पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचारों के विकास का पता लगाने का प्रयास करता है, उनके दार्शनिक सिद्धांतों और नीतियों और शासन में उनकी अभिव्यक्ति के बीच जटिल अंतर्संबंध की जांच करता है। उनके लेखन, भाषणों और नीतिगत योगदान का विश्लेषण करके, इस अध्ययन का उद्देश्य आधुनिक भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य पर उपाध्याय के विचारों की स्थायी प्रासंगिकता और प्रभाव को उजागर करना है।

शोध का उद्देश्य:

१) उपाध्याय के राजनीतिक दर्शन को आकार देने वाले मूल सिद्धांतों और मान्यताओं की जांच और विश्लेषण करना।

२) जांच करना कि उपाध्याय के विचारों ने भारतीय राजनीतिक विचार और भारतीय जनसंघ (बाद में भाजपा) जैसे संगठनों की नीतियों को कैसे प्रभावित किया।

३) उपाध्याय के विचारों की तुलना अन्य प्रमुख राजनीतिक विचारकों के विचारों से करना।

४) उपाध्याय के राजनीतिक विचार की ताकत और कमजोरियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

५) उपाध्याय के विचारों को भारत में राजनीतिक दलों और सरकारों द्वारा व्यावहारिक नीतियों या शासन सिद्धांतों में कैसे अनुवादित किया गया है इसका अध्ययन करना।

साहित्य समीक्षा :

१) **राकेश सिन्हा (२००२).** "दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद". राकेश सिन्हा की पुस्तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय की एकात्म मानववाद की अवधारणा की खोज करती है, जो एक सामाजिक-राजनीतिक दर्शन है जो मानव जीवन के आध्यात्मिक और भौतिक पहलुओं को एकीकृत करता है। सिन्हा पश्चिमी उदारवाद और मार्क्सवाद की

आलोचना करते हैं, विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की वकालत करते हैं जो व्यक्तिगत गरिमा और सांस्कृतिक जड़ों का सम्मान करता है। उपाध्याय के विचार समकालीन शासन और सामाजिक सद्भाव की बहस में प्रासंगिक हैं।

२) **देवेंद्र स्वरूप (१९७८).** "दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक दर्शन". देवेंद्र स्वरूप का काम पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक दर्शन में गहराई से उतरता है, उनकी राष्ट्रवादी दृष्टि, सामाजिक-राजनीतिक आदर्शों और राज्य, व्यक्तिगत अधिकारों और सांस्कृतिक लोकाचार पर विचारों की जाँच करता है। स्वरूप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भारतीय जनसंघ में उनके नेतृत्व तक उपाध्याय की बौद्धिक यात्रा का पता लगाते हैं।

३) **जितेंद्र कुमार शर्मा (२०१६).** "दीनदयाल उपाध्याय: विचारधारा और धारणा". यह संपादित खंड पंडित दीनदयाल उपाध्याय की विचारधारा और भारतीय राजनीति पर इसके प्रभाव का पता लगाता है। यह उनके मानवतावाद, आर्थिक नीति, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का विश्लेषण करता है। पुस्तक भारतीय जनसंघ और भाजपा पर उपाध्याय के प्रभाव की भी जांच करती है, रूढ़िवादी विचार और नीति निर्माण पर उनके स्थायी प्रभाव को उजागर करती है।

४) **सुदर्शन अयंगर (२०१७).** "दीनदयाल उपाध्याय का विजन". सुदर्शन अयंगर की पुस्तक भारत के लिए उपाध्याय के विजन की खोज करती है, जिसमें विकेंद्रीकृत, आत्मनिर्भर सामाजिक-आर्थिक संरचना के लिए उनकी वकालत पर जोर दिया गया है। वह बताते हैं कि कैसे उपाध्याय की 'अंत्योदय' की अवधारणा ने उनके शासन और नीति-निर्माण को निर्देशित किया, जिसका उद्देश्य समृद्ध और हाशिए के वर्गों के बीच की खाई को पाटना था, सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का समाधान करने में इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

५) **महेश चंद्र शर्मा (१९८७).** "दीनदयाल उपाध्याय: एक व्यक्तित्व". महेश चंद्र शर्मा द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जीवनी उनके प्रारंभिक जीवन, आरएसएस के भीतर बौद्धिक विकास और भारतीय जनसंघ को आकार देने में नेतृत्व की भूमिका का गहन अन्वेषण प्रदान करती है। शर्मा उपाध्याय के अद्वितीय राजनीतिक दर्शन, व्यक्तिगत प्रेरणाओं और ऐतिहासिक संदर्भों का भी पता लगाते हैं।

ये कार्य सामूहिक रूप से पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचारों के बारे में हमारी समझ को समृद्ध करते हैं, जो उनकी बौद्धिक विरासत, वैचारिक योगदान और भारतीय राजनीति और समाज पर उनके स्थायी प्रभाव को उजागर करने वाले विविध दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। वे विद्वानों, नीति निर्माताओं और समकालीन भारतीय रूढ़िवाद और राष्ट्रवाद की वैचारिक नींव को समझने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए आवश्यक साहित्य के रूप में काम करते हैं।

शोध पद्धति:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचारों का अध्ययन करने के लिए शोध पद्धति में साहित्य समीक्षा, वैचारिक रूपरेखा, प्राथमिक स्रोत विश्लेषण, तुलनात्मक विश्लेषण, परिस्थिति अध्ययन और नीति विश्लेषण, साक्षात्कार और सर्वेक्षण, ऐतिहासिक संदर्भ, अंतःविषय दृष्टिकोण, नैतिक विचार और एक विश्लेषणात्मक रूपरेखा शामिल है। यह दृष्टिकोण उपाध्याय की विचारधाराओं, भारतीय राजनीति पर उनके प्रभाव और समकालीन समय में उनकी प्रासंगिकता की व्यापक समझ प्रदान करता है। यह भारतीय राजनीतिक विमर्श में उनकी स्थायी विरासत की सूक्ष्म समझ सुनिश्चित करता है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचार:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, जिनका जन्म २५ सितंबर, १९१६ को उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में हुआ था, धार्मिक रूप से प्रभावित व्यक्ति थे, जिन्होंने आध्यात्मिकता और भारतीय संस्कृति में गहरी रुचि विकसित की। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उनका पालन-पोषण स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं से प्रभावित था, जिसमें समाज सेवा और जनता के उत्थान पर जोर दिया गया था। महात्मा गांधी के अहिंसा, सत्य और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों ने भी उनकी राजनीतिक चेतना को आकार दिया।

उपाध्याय ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) में सक्रिय रूप से भाग लिया, जो एक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन था, जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, समाज सेवा और आत्म-अनुशासन पर जोर देता था। श्यामा प्रसाद मुखर्जी और बलराज मधोक जैसे प्रमुख नेताओं के साथ उनकी बातचीत ने उनके राजनीतिक दृष्टिकोण को और समृद्ध किया। मुखर्जी ने संवैधानिक सिद्धांतों और राष्ट्रीय एकता और पहचान की मजबूत रक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया, जबकि मधोक ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और सामाजिक सुधारों पर जोर दिया।

उपाध्याय के राजनीतिक विचार उनके शुरुआती प्रभावों और अनुभवों के माध्यम से आकार लेने लगे, जिसमें आध्यात्मिक नवीनीकरण, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और सामाजिक-आर्थिक न्याय का मिश्रण था। धार्मिक परिवार में उनका लालन-पालन और भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान की वकालत करने वाले दूरदर्शी नेताओं और संगठनों के संपर्क ने एक विचारक, विचारक और राजनीतिक नेता के रूप में उनके बाद के योगदान की नींव रखी। ग्रामीण जड़ों से भारतीय राजनीति के दिग्गज बनने तक की उनकी यात्रा भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जो राष्ट्रीय विकास के समग्र दृष्टिकोण की दिशा में उनके प्रयासों का मार्गदर्शन करती है जो पीढ़ियों को प्रेरित करती रहती है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एक प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, एकात्म मानववाद की अपनी अवधारणा के लिए जाने जाते हैं, जो सामाजिक उत्थान के लिए भौतिक और आध्यात्मिक आयामों के संश्लेषण पर जोर देता है। उनके विचारों ने भारत में रूढ़िवादी और राष्ट्रवादी प्रवचन को काफी प्रभावित किया है, खासकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और भारतीय जनसंघ के साथ उनके जुड़ाव के माध्यम से, जो बाद में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) में विकसित हुआ। उपाध्याय का राजनीतिक विचार एकात्म मानववाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, अंत्योदय, विकेंद्रीकरण, पश्चिमी विचारधाराओं की आलोचना और राजनीति में आध्यात्मिकता की भूमिका पर केंद्रित है। वह विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की वकालत करते हैं जो व्यक्तिगत गरिमा का सम्मान करता है और सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के साथ आर्थिक प्रगति को संतुलित करता है। वह पश्चिमी सांस्कृतिक आधिपत्य का विरोध करते हुए राष्ट्रीय पहचान और एकता के लिए भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन को आवश्यक मानते हैं।

उपाध्याय अंत्योदय की अवधारणा के समर्थक हैं, जिसका अर्थ है समाज के अंतिम व्यक्ति का उत्थान, जिसका उद्देश्य विकेंद्रीकृत शासन और आत्मनिर्भरता के माध्यम से हाशिए पर पड़े समुदायों को सशक्त बनाना है। वे विकेंद्रीकृत शासन और आर्थिक नियोजन की वकालत करते हैं, उनका मानना है कि स्थानीय स्वशासन और समुदाय आधारित पहल प्रभावी प्रशासन और जमीनी स्तर पर विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

उपाध्याय के राजनीतिक विचारों का भारतीय राजनीति पर स्थायी प्रभाव पड़ा है, जिन्होंने भाजपा की वैचारिक नींव को आकार दिया है और राष्ट्रवाद, शासन और सामाजिक-आर्थिक विकास से संबंधित नीति निर्माण को प्रभावित किया है। भारत के सामाजिक-राजनीतिक विकास के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण तलाशने वालों के लिए उनकी विरासत महत्वपूर्ण बनी हुई है। भारतीय जनसंघ के सह-संस्थापक और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सामाजिक-राजनीतिक एजेंडे को आकार देने वाले एक प्रमुख विचारक के रूप में, उपाध्याय के विचार भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की वैचारिक नींव में व्याप्त हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, विकेन्द्रित शासन और नैतिक नेतृत्व पर उनका जोर भाजपा की नीतियों और विमर्श में गूंजता रहता है, जो समकालीन भारत में राष्ट्रवाद, शासन मॉडल और सामाजिक-आर्थिक विकास रणनीतियों पर बहस को आकार देता है।

एकात्म मानववाद: मुख्य दार्शनिक सिद्धांत

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रस्तावित एकात्म मानववाद एक दार्शनिक ढांचा है जो आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और भौतिक आयामों के संश्लेषण के माध्यम से मानव अस्तित्व की जटिलताओं को संबोधित करने का प्रयास करता है। यह पश्चिमी उदारवाद के चरम व्यक्तिवाद और मार्क्सवाद के सामूहिकतावाद को अस्वीकार करता है, एक सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व की वकालत करता है जहाँ व्यक्तिगत आकांक्षाएँ समाज के कल्याण के साथ संरेखित होती हैं।

उपाध्याय की अवधारणा भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत में निहित है, जो आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा निर्देशित सार्थक विकास की आवश्यकता पर जोर देती है जो एकता, नैतिकता और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देती है। उन्होंने भौतिक प्रगति पर उनके ध्यान और आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आयामों की उपेक्षा के लिए पश्चिमी विचारधाराओं की आलोचना की, पश्चिमी उदारवाद को अत्यधिक व्यक्तिवाद और उपभोक्तावाद को बढ़ावा देने के रूप में देखा, और मार्क्सवाद को इतिहास के अपने नियतात्मक दृष्टिकोण और वर्ग संघर्ष पर जोर देने के लिए।

धर्म, नैतिक कर्तव्य, धार्मिकता और नैतिक दायित्वों की अवधारणा, एकात्म मानववाद के लिए केंद्रीय है, जिसे उन्होंने तर्क दिया कि शासन और सामाजिक संरचनाओं में बनाए रखा जाना चाहिए। अंत्योदय, या समाज के सबसे कमज़ोर और सबसे हाशिए पर पड़े वर्गों का उत्थान, इस दृष्टिकोण के भीतर एक प्रमुख सिद्धांत है। उपाध्याय ने ऐसी नीतियों और पहलों की वकालत की जो विकेंद्रीकृत शासन, सामुदायिक भागीदारी और आत्मनिर्भर आर्थिक मॉडल के माध्यम से गरीबों और वंचितों को सशक्त बनाती हैं।

एकात्म मानववाद विकेंद्रीकृत शासन और स्थानीय आत्मनिर्भरता (स्वदेशी) को सामाजिक-आर्थिक विकास प्राप्त करने, स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने और स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने के साधन के रूप में बढ़ावा देता है। समग्र और समावेशी समाज के लिए उपाध्याय की दृष्टि प्रमुख पश्चिमी प्रतिमानों के लिए एक आकर्षक विकल्प का प्रतिनिधित्व करती है और भारत में रूढ़िवादी विचारों की वैचारिक नींव को आकार देती है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और स्वदेशी अर्थशास्त्र:

एक प्रमुख भारतीय अर्थशास्त्री पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारत की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने और आर्थिक मामलों में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और स्वदेशी अर्थशास्त्र की वकालत की। उनका मानना था कि प्राचीन सभ्यता और आध्यात्मिक परंपराओं में निहित भारत की सांस्कृतिक विरासत ने एक

ऐसी एकजुट शक्ति प्रदान की जो क्षेत्रीय, भाषाई और धार्मिक विविधताओं से परे है। उपाध्याय ने पश्चिमी सांस्कृतिक मानदंडों के खिलाफ तर्क दिया और ऐसी नीतियों की वकालत की जो स्वदेशी प्रथाओं का जश्न मनाती हैं और उन्हें पुनर्जीवित करती हैं, जैसे कि भारतीय भाषाओं, साहित्य, कला और दर्शन का अध्ययन और प्रचार।

दूसरी ओर, स्वदेशी अर्थशास्त्र ने स्वदेशी उद्योगों के विकास और घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए स्थानीय संसाधनों के उपयोग पर जोर दिया। उपाध्याय का मानना था कि स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को सशक्त बनाने से रोजगार के अवसर पैदा होंगे और समुदायों का सामाजिक-आर्थिक ताना-बाना मजबूत होगा। यह विकेंद्रीकृत आर्थिक मॉडल शासन के उनके दृष्टिकोण के अनुरूप है, जो निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में स्थानीय स्वशासन और सामुदायिक भागीदारी को प्राथमिकता देता है।

उपाध्याय के विचार भारत में आर्थिक नीति और सांस्कृतिक पहचान पर समकालीन बहसों में गूंजते रहते हैं, जो वैश्वीकरण को राष्ट्रीय विरासत और स्थानीय स्वायत्तता के संरक्षण के साथ संतुलित करने वाली नीतियों को प्रभावित करते हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और स्वदेशी अर्थशास्त्र के विजेता के रूप में उनकी विरासत महत्वपूर्ण बनी हुई है, जो विकास के वैकल्पिक मार्गों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जो स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों और सामुदायिक कल्याण को प्राथमिकता देती है।

ग्रामीण विकास और सामाजिक कल्याण के लिए दृष्टिकोण:

ग्रामीण विकास और सामाजिक कल्याण के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय का दृष्टिकोण अंत्योदय के सिद्धांत पर आधारित है, जो समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान पर जोर देता है। यह सिद्धांत शासन और नीति निर्माण के प्रति उनके दृष्टिकोण को निर्देशित करता है, विशेष रूप से ग्रामीण भारत के संबंध में, जहां उन्होंने जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण और सतत विकास की अपार संभावनाएं देखीं। उपाध्याय का मानना था कि किसी राष्ट्र की सच्ची प्रगति उसके सबसे हाशिए पर पड़े और वंचित वर्गों के उत्थान में निहित है। उन्होंने ऐसी नीतियों और कार्यक्रमों की वकालत की जो ग्रामीण समुदायों, आदिवासी आबादी और अन्य हाशिए पर पड़े समूहों की जरूरतों को प्राथमिकता देते हैं।

अंत्योदय की अवधारणा सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है, जिसका उद्देश्य गरीबी को कम करना, असमानता को कम करना और शिक्षा, कौशल विकास और आर्थिक अवसरों के माध्यम से व्यक्तियों को सशक्त बनाना है। उपाध्याय ने एक विकेंद्रीकृत शासन संरचना की कल्पना की, जहां स्थानीय समुदाय निर्णय लेने और विकास योजना बनाने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। यह दृष्टिकोण स्वदेशी अर्थशास्त्र की उनकी वकालत के साथ संरेखित है, जो जमीनी स्तर पर आत्मनिर्भरता और सतत विकास को बढ़ावा देता है।

अपने दृष्टिकोण को क्रियान्वित करने के लिए उपाध्याय ने स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और सहकारी समितियों जैसी पहलों को बढ़ावा दिया, जिसका उद्देश्य स्थानीय संसाधनों को जुटाना, उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना और ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के अवसरों में सुधार करना था। शिक्षा और सांस्कृतिक पुनरुत्थान ग्रामीण विकास के लिए उपाध्याय के दृष्टिकोण के अभिन्न अंग थे। उन्होंने ऐसे शैक्षिक सुधारों की वकालत की जो ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी आजीविका के लिए आवश्यक भारतीय मूल्यों, नैतिकता और व्यावहारिक कौशल को बढ़ावा देते हैं।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान न केवल स्थानीय परंपराओं को संरक्षित करता है बल्कि पर्यटन और हस्तशिल्प जैसी आर्थिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहित करता है, जो ग्रामीण विकास में योगदान देता है। निष्कर्ष रूप में, ग्रामीण विकास

और सामाजिक कल्याण के लिए उपाध्याय का दृष्टिकोण अंत्योदय, विकेंद्रीकृत शासन और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित है।

राजनीतिक विरासत और समकालीन प्रासंगिकता:

भारत में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की राजनीतिक विरासत अभिन्न मानवतावाद और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में गहराई से निहित है। उनके विचारों ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और उसकी नीतियों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है, जिससे पार्टी के शासन, सामाजिक-आर्थिक सुधारों और राष्ट्रीय पहचान के प्रति दृष्टिकोण को आकार मिला है। अभिन्न मानवतावाद भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों के बीच संतुलन पर जोर देता है, नैतिक नेतृत्व, सामाजिक सामंजस्य और समावेशी विकास को बढ़ावा देता है।

अंत्योदय या समाज के सबसे कमजोर वर्गों के उत्थान के बारे में उपाध्याय का दृष्टिकोण, भाजपा द्वारा जन धन योजना, आयुष्मान भारत जैसी कल्याणकारी योजनाओं और ग्रामीण विकास और उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली पहलों पर जोर देने में परिलक्षित होता है। इन नीतियों का उद्देश्य हाशिए पर पड़े समुदायों को सशक्त बनाना, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा तक पहुँच बढ़ाना और आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भी भाजपा का एक प्रमुख लक्ष है, जिसका ध्यान भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देने पर है। राष्ट्रीय पहचान, भाषा, शिक्षा और सांस्कृतिक प्रतीकों से जुड़े मुद्दों पर पार्टी का रुख नागरिकों के बीच एकता और गौरव को बढ़ावा देते हुए भारत की विविध सांस्कृतिक परंपरा का जश्न मनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

स्वदेशी अर्थव्यवस्था की उपाध्याय की वकालत, आत्मनिर्भरता, स्वदेशी उद्योग और विकेंद्रीकृत शासन पर जोर देना, भाजपा की आर्थिक नीतियों को प्रभावित करना जारी रखता है। मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया और कृषि सुधार जैसी पहलों का उद्देश्य उत्पादकता, ग्रामीण उद्यमिता और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक तकनीक के साथ एकीकृत करना है। समकालीन भारतीय राजनीति में, उपाध्याय की विरासत प्रासंगिक बनी हुई है क्योंकि भाजपा जटिल सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों और सांस्कृतिक विविधता से निपट रही है। नैतिक शासन, नैतिक मूल्यों और नेतृत्व की जवाबदेही पर उनका जोर शासन में पारदर्शिता और अखंडता की मांग करने वाली जनता की भावनाओं के साथ प्रतिध्वनित होता है। आत्मनिर्भर, सांस्कृतिक रूप से जीवंत और सामाजिक रूप से एकजुट भारत का उनका दृष्टिकोण भारत की विशिष्ट पहचान और विरासत को संरक्षित करते हुए समकालीन मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक खाका के रूप में कार्य करता है।

निष्कर्ष:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिंतन पारंपरिक भारतीय मूल्यों और समकालीन आकांक्षाओं का मिश्रण है। भारत के लिए उनका दृष्टिकोण एकात्म मानवतावाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और सामाजिक-आर्थिक सुधारों पर आधारित है। उपाध्याय संतुलित विकास की वकालत करते हैं जो भौतिक प्रगति को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ संतुलित करता है, पूंजीवाद और समाजवाद की अतिवादिता को खारिज करता है। वह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन पर भी जोर देते हैं, स्वदेशी परंपराओं और भाषाओं का जश्न मनाते हैं। विकेंद्रीकृत शासन और स्वदेशी अर्थशास्त्र के लिए उपाध्याय की वकालत का उद्देश्य स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाना और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना है। उनके विचार भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और उसकी नीतियों को

प्रभावित करते हैं, राष्ट्रीय विमर्श और नीति निर्माण को आकार देते हैं। उनकी दृष्टि प्रासंगिक बनी हुई है क्योंकि भारत अपनी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करते हुए और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का समाधान करते हुए एक वैश्वीकृत दुनिया की जटिलताओं से निपटता है। उनकी विरासत पीढ़ियों को प्रेरित करती है और भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को गहन तरीकों से आकार देती है।

संदर्भ:

1- *Andersen, W. K., & Damle, S. D. (1987). The brotherhood in saffron: The Rashtriya Swayamsevak Sangh and Hindu revivalism. New Delhi: Vistaar Publications.*
2- *Chandra, B., Mukherjee, A., Mukherjee, M., & Panikkar, K. N. (2008). India since independence. New Delhi: Penguin Books India.*
3- *Das, K. N. (2016). Integral humanism: The legacy of Pandit Deendayal Upadhyay. New Delhi: Suruchi Prakashan.*
4- *Elst, K. (2001). Pandit Deendayal Upadhyaya: Ideologue of Hindutva. New Delhi: Voice of India.*
5- *Gupta, S. C. (2003). Political philosophy of Pandit Deendayal Upadhyay. Delhi: Konark Publishers.*
6- *Jaffrelot, C. (1996). The Hindu nationalist movement and Indian politics: 1925 to the 1990s. New Delhi: Penguin Books India.*
7- *Mishra, P. (2004). An end to suffering: The Buddha in the world. New Delhi: Picador India.*
8- *Nanda, B. R. (2005). Pandit Deendayal Upadhyaya: Ideology and perception. New Delhi: Concept Publishing Company.*
9- *Ralhan, O. P. (1999). Pandit Deendayal Upadhyaya: The man and his thought. New Delhi: Deep & Deep Publications.*
10- *Rajagopal, A. (2001). Politics after television: Hindu nationalism and the reshaping of the public in India. Cambridge: Cambridge University Press.*
11- *Sharma, R. S. (1998). Pandit Deendayal Upadhyay: Ideologue of integral humanism. New Delhi: Sahitya Bhawan Publications.*
12- *Upadhyay, D. (1965). Integral humanism: A vision for the new age. New Delhi: Bharatiya Jana Sangh Publications.*
13- *"Points about Deendayal Upadhyay". (2018, September 25). India Today. Retrieved from https://www.indiatoday.in/*
14- *https://en.wikipedia.org/wiki/Deendayal_Upadhyaya#:~:text=Upadhyaya%20is%20known%20for%20drafting,swadeshi%20(self%2Dsufficiency).*
15- *https://mgcub.ac.in/pdf/material/202005101711354a3dd66b9d.pdf*
16- *https://www.kamalsandesh.org/political-philosophy-deendayal-upadhyaya/*
17- *https://iasbaba.com/2020/02/pandit-deen-dayal-upadhyay-vishesh-rstv-ias-upsc/*